**|| श्री स्वामी समर्थ ||**

---

## ||यक्षिणी नाम स्तोत्र|

---

श्रीगणेशाय नमः ।
षटत्रिंशदुक्ता यक्षिण्यस्तां सर्वा वांच्छित प्रदाः ॥ १ ॥
तासा नामानि विध्याच्श्र श्रृणु वक्ष्ये यथाविधिः ॥ २ ॥
विचित्रा विभ्रमा हंसी भिक्षिणी जनरंजिका ॥ ३ ॥
विशाला मदना घंटा कालकर्णी महाभया ॥
माहेन्द्री शंखिनी चांद्री श्मशानी वटयक्षिणी ॥ ४ ॥
मेखला विकला लक्ष्मी कामिनी शतपत्रिका ॥
सुलोचना सुशोभाढ्या कपाली च विलासिनी ॥ ५॥
नटी कामेश्वरी चैव स्वर्णरेखा सुसुंदरी ॥
मनोहरा प्रमोदा तु रागिणी नखकेशिका ॥ ६॥
नेमिनी पद्मिनी स्वर्णवती देवी रतिप्रिया ॥
इमाः षदत्रिंशदाख्याता यक्षिण्यश्च सुसिद्धिदाः ॥ ७॥
सदगुरु श्री स्वामि द्यान मात्रेण यो पढती
तेन सर्व यक्षिणी विद्याम साद्यं करोति न संशयाः ॥ ८ ॥

---

॥ श्री गुरुदत्तात्रेयार्पणमस्तु ॥

|| श्री स्वामी समर्थार्पर्ण मस्तु||